मारवाड़ के राठौड़ राजवंश

मारवाड़ : जैसलमेर, बाड़मेर, नागौर, पाली, जोधपुर
डीडवाना, कुचामन, बालोतरा, बीकानेर

↳ मारवाड़ को मरुकान्तार, मरुभूमि भी कहा जाता है

↳ मारवाड़ में प्राचीनतम समय व्यवसायिक केन्द्र
↳ पाली (पालीवाल ब्राह्मण)

→ रावसीहा → 1240-1273 ई

→ चुंडा

→ रणमल

→ जोधा → सातल | सूजा | बीका

→ राव गांगा → 1527

→ मालदेव → 1531-1562

→ चन्द्रसेन → 1562-1581

→ मोटा राजा उदयसिंह

→ शुरसिंह

→ गजसिंह

दुर्गादास

जसवंत सिंह → 1638-1678

अजीतसिंह → 1707

अभयसिंह → 1730 → आलूता देवी बिराट

विजय सिंह

भीम सिंह → 1807 -

मान सिंह

राव सीहा :

↳ राव सीहा को राठौड़ राजवंश का आदिपुरुष मूलपुरुष | संस्थापक कहा जाता है।

राजधानी → खेड़

→ पालीवाल ब्राह्मणों का वध करके होली के दिन राठौड़ राजवंश की नींव रखी

→ छतरी → पाली

राजा धुहड़ :

↳ कर्नाटक से चक्रेश्वरी माता / नागणेची माता की प्रतिमा लाकर नगाणा गांव बालोतरा में प्रतिस्थापित करवाया

→ जोधपुर के राठौड़ो की कुलदेवी → नागणेची माता

→ प्राचीनतम मन्दिर → नगाणा गांव

→ मल्लीनाथ जी →

- शासक के साथ एक सन्त भी रहे है।
- राजधानी → मेवानगर

राव चुडा :→ मारवाड़ का वास्तविक संस्थापक

→ राव चुडा ने सामन्त प्रथा की शुरुआत की

→ राव चुडा की तुलना शिवाजी से की जाती है।

→ राव चुडा ने मण्डोर को राजधानी बनाया।

मण्डोर को माण्डव्यपुर के नाम से जाना जाता है।

उत्तरी भारत का एकमात्र रावण मंदिर - मण्डोर → गुर्जर प्रतिहारों के सिंहासन

राव चुडा को मण्डोर ईन्दा शाखा के प्रतिहारों ने दहेज में दिया

→ चान्द बावड़ी < मण्डोर / आभानेरी दौसा।

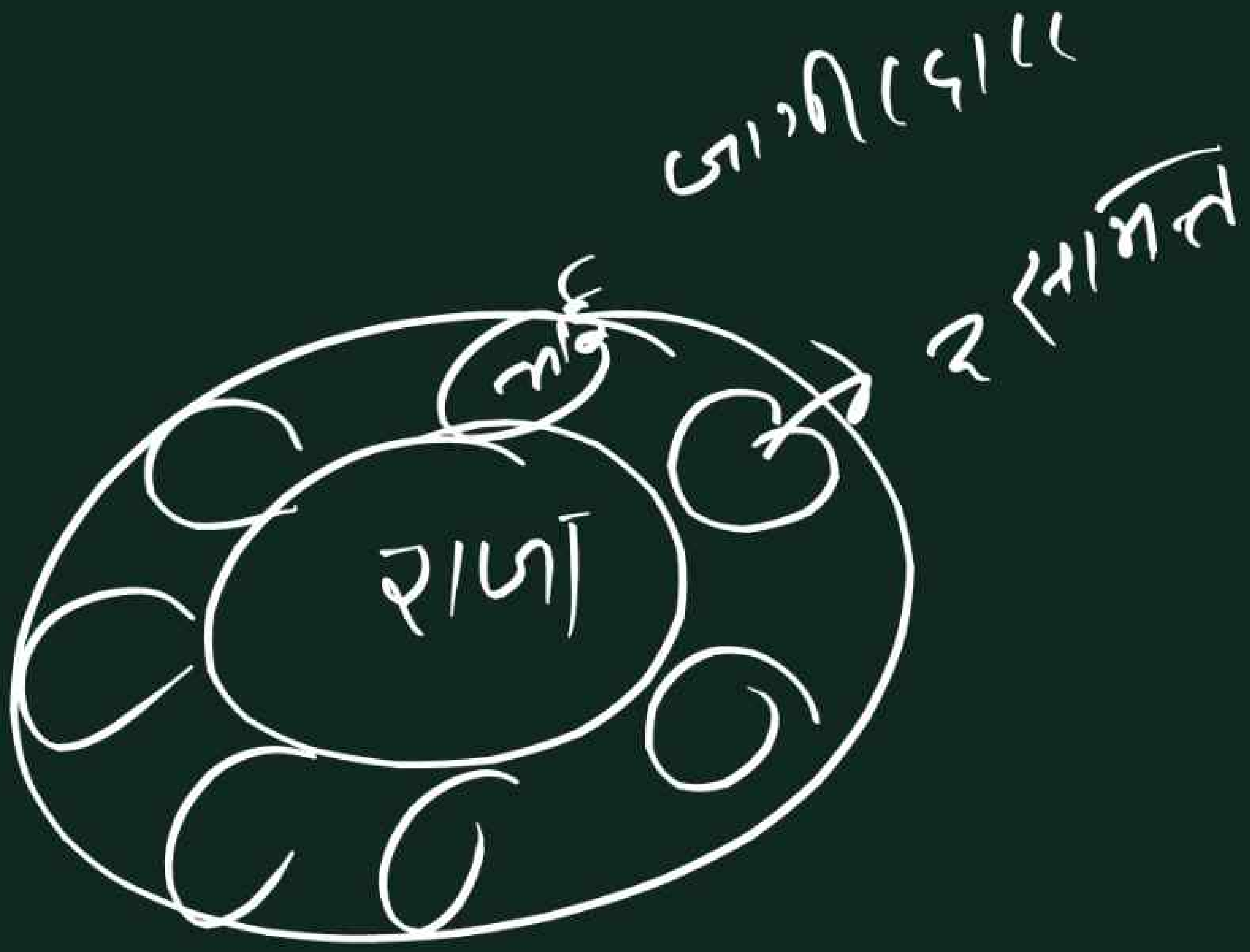
जागीरदार
सामन्त
राजा

रणमल → इनका अधिकांश समय मेवाड़ मे बीता

↳ रणमल ने अपनी बहन हंसा बाई का विवाह मेवाड़ शासक राणा लाखा के साथ दिया

रणमल की शर्त → हंसा बाई से उत्पन्न सन्तान मेवाड़ का राजा बनेगा

→ मेवाड़ मे रणमल का हस्तक्षेप → मेवाड़ मे राठौड़ो को उच्च पद दिया

→ रणमल की पासवान → भारमली के सहयोग से रणमल को चितौड़ दुर्ग मे शहद देकर हत्या कर दी

डाबरिया | पासवान | पड़दायत | दासी : पहले राजपूत राजा अपनी बेटी की शादी के समय कुछ कुंवारी कन्याए दहेज मे साथ भेजते थे

↳ इनसे पैदा सन्तान को → राणा, राजपूत, चाकर, दरोगा, गोला कहा जाता था

राव जोधा

↳ 1453 में हड़बु जी के सहयोग | आशीर्वाद से मण्डोर को जीत लिया राव जोधा।

नोट → हड़बूजी को राव जोधा को बेंगटी गांव उपहार स्वरूप ✓ दिया

आवल-बावल की संधि : 1453

↳ करवायी थी → हंसा बाई

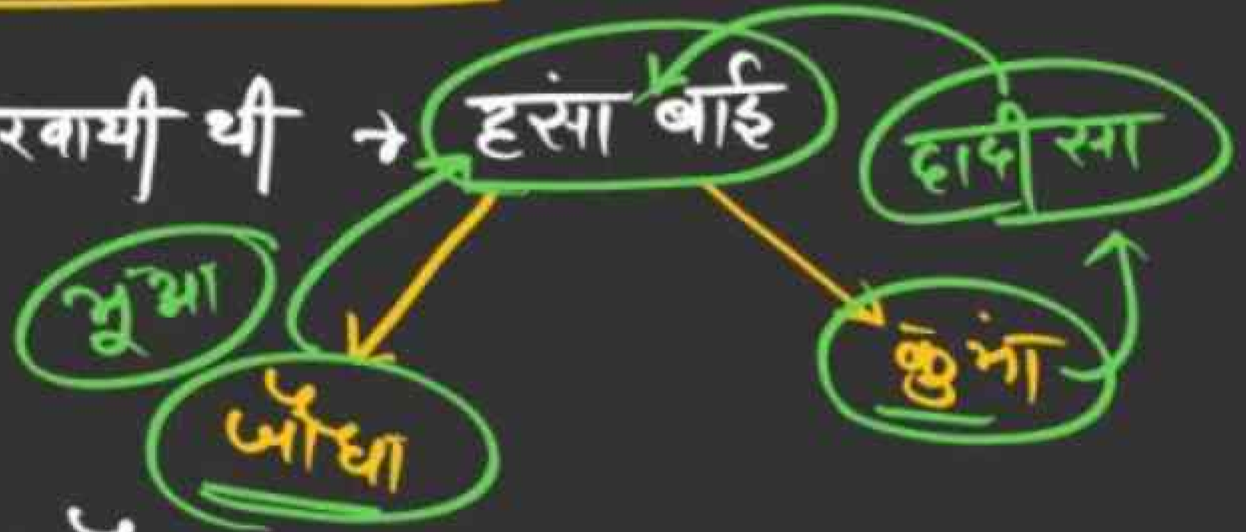

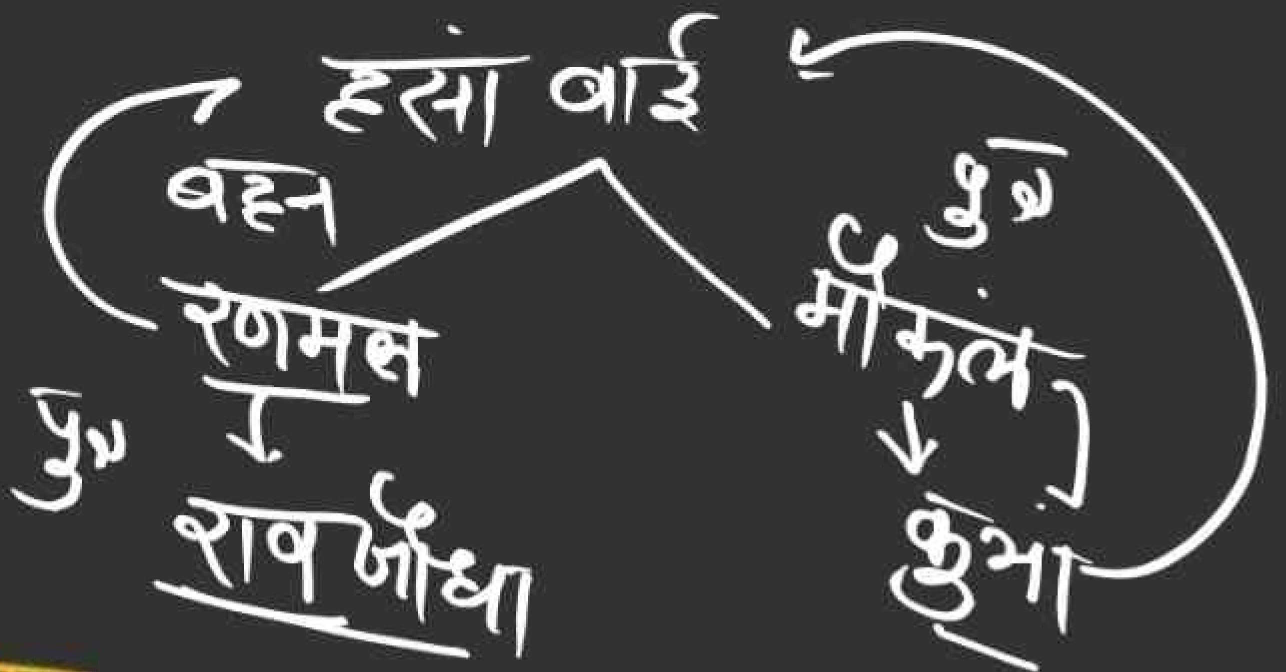

मुख्य केन्द्र → सोजत

↳ मारवाड़ और मेवाड़ की सीमा का निर्धारण किया

↳ राव जोधा ने अपनी पुत्री शृंगारी देवी का विवाह कुंभा के पुत्र रायमल के साथ किया

→ शृंगारी देवी घोसुण्डी बावड़ी बनवायी चित्तौड़

→ 1459 → राव जोधा ने जोधपुर शहर की स्थापना की

→ 1559 → महाराणा उदय सिंह ने उदयपुर शहर की स्थापना।

→ 1659 → देवराई का युद्ध

→ 1759 → काकोंड. का युद्ध

→ 1859 → तात्या टोपे को फांसी

→ 1959 → पंचायती राज का गठन

1459 → जोधपुर शहर की स्थापना (12 मई)

↳ उपनाम : सनसिटी
सूर्य नगरी
मरुस्थल का प्रवेश
नीला शहर
ब्लैक्रैकर सिटी
विधिनगरी

राव जोधा ने जोधपुर को अपनी राजधानी बनाया

→ राव जोधा :→ जोधपुर दुर्ग

↳ राव जोधा ने करनी माता के हाथों जोधपुर दुर्ग की नींव रखवायी

↳ यह दुर्ग पांचोटा की पहाड़ी (चिड़ीयाटूंक) की पहाड़ी पर बना है

↳ पहले यह दुर्ग मसुरिया की पहाड़ी पर बनना तय था
पानी समस्या के कारण इसे चिड़ीयाटूंक की पहाड़ी पर
बनाया

उपनाम → जोधपुर दुर्ग को
↓
मेहरानगढ़
मयूरध्वजगढ़
गढ़ चिंतामणी
कागमुखी
सूर्यगढ़
राठौड़ों के शौर्य का प्रतीक

किपलिंग
↓
इस दुर्ग परियों व अप्सराओं द्वारा निर्मित है।

राव जोधा के पुत्र

- राव बीका ने 1465 में जांगल प्रदेश की नींव रखी
  - राजधानी → अहिच्छत्रपुर ✓
- राव जोधा के पुत्र → दूदा ने मेड़ता की स्थापना की

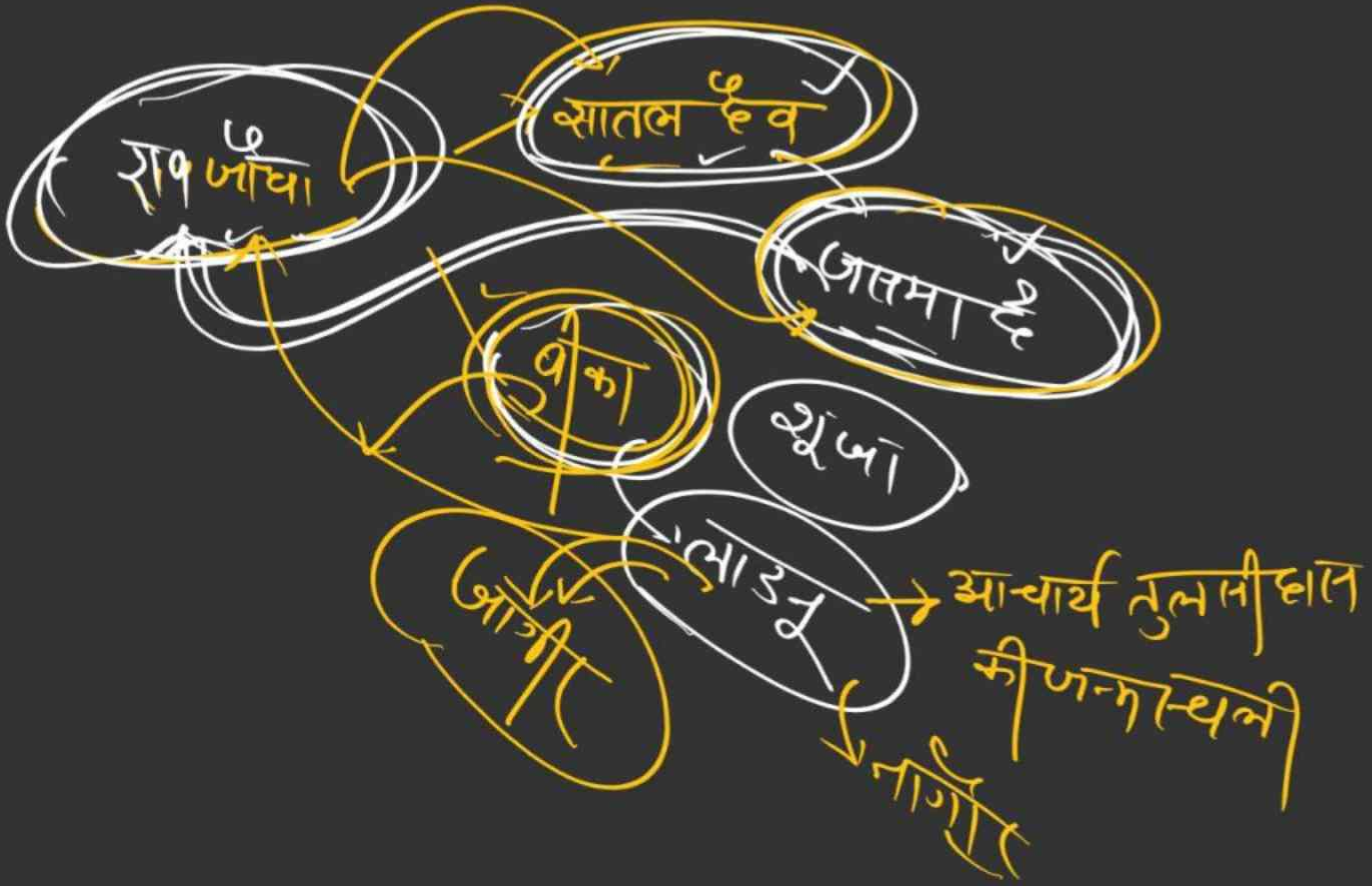
राव जोधा
सातल देव
जसमा दे
बीका
सूजा
आचार्य तुलसीदास
नागौर

शातल देव : घुडले खाँ के मध्य युद्ध हुआ

पिम्पाड़ का युद्ध → 1492 ; शातलदेव जीत

→ मारवाड़ का प्रसिद्ध लोकनृत्य : घुड़ला नृत्य

चैत्र कृष्ण अष्टमी → शीतला माता का मेला

राव गांगा

- → खानवा युद्ध 1527
  - → मे आमंत्रित किया
  - मालदेव को भेजा (4000)
- → सर्वाधिक अफीम का सेवन
  - अफीम → सावलीया मंदिर चित्तौड़गढ़
- → गंग श्याम मंदिर का निर्माण करवाया।
- → गांगेलाव तालाब

मालदेव → 1531-1562

उपनाम :

- मारवाड़ का पितृहन्ता राजा → राव गांगा की हत्या।
- हसमत वाला राजा
- पुरुषार्थी राजकुमार
- हिंदु बादशाह
- 52 युद्धों का विजेता
- 58 परगनों का विजेता
- परिचम दुर्गों का निर्माता

मारवाड़ का पितृहन्ता राजा → राव मालदेव ✓

✓ मारवाड़ का दुसरा पितृहन्ता → बख्त सिंह ✓

✓ मेवाड़ ,, ,, ,, → उदा ✓

✓ चौहानों का ,, ,, → जगदेव ✓

गुर्जर प्रतिहारों का पितृहन्ता → मिहिर भोज

1532 ई. में सोजत में मालदेव का राज्याभिषेक हुआ।

मालदेव की जीत

- बीकानेर के शासक कल्याणमल को हराया
- भाद्राजूण पर अधिकार
- मेड़ता — विरमदेव को हराया।
- सिवाणा → डूंगरसिंह को हराया
- फलोदी में लूणकरण भाटी को हराया।
- जालौर में सिकन्दर खां को
- नागौर में दौलतखां को हीराबाड़ी के युद्ध में हराया

पाहेबा | साहेबा का युद्ध → 1541-42 → BKNR

↳ इस युद्ध में बीकानेर शासक राव जैतसी को हराया

मालदेव के खिलाफ के खिलाफ राव जैतसी

शेरशाह सूरी के पास (नागराज) सेनापति भेजा

राव मालदेव ने अपने प्रमुख सेनापति (जैता) | (कूपा)

डीडवाना | जागीर दी ✓

↳ झील → पड़ी नी साल कुते ऊ फावड़े जी लूकू छै → कोछोर (झील)

पचपदरा, डीडवाना, सांभर, कुचामन, नावा, लूणकरणसर, फलोदी, छापर, डेगाना, कावोद

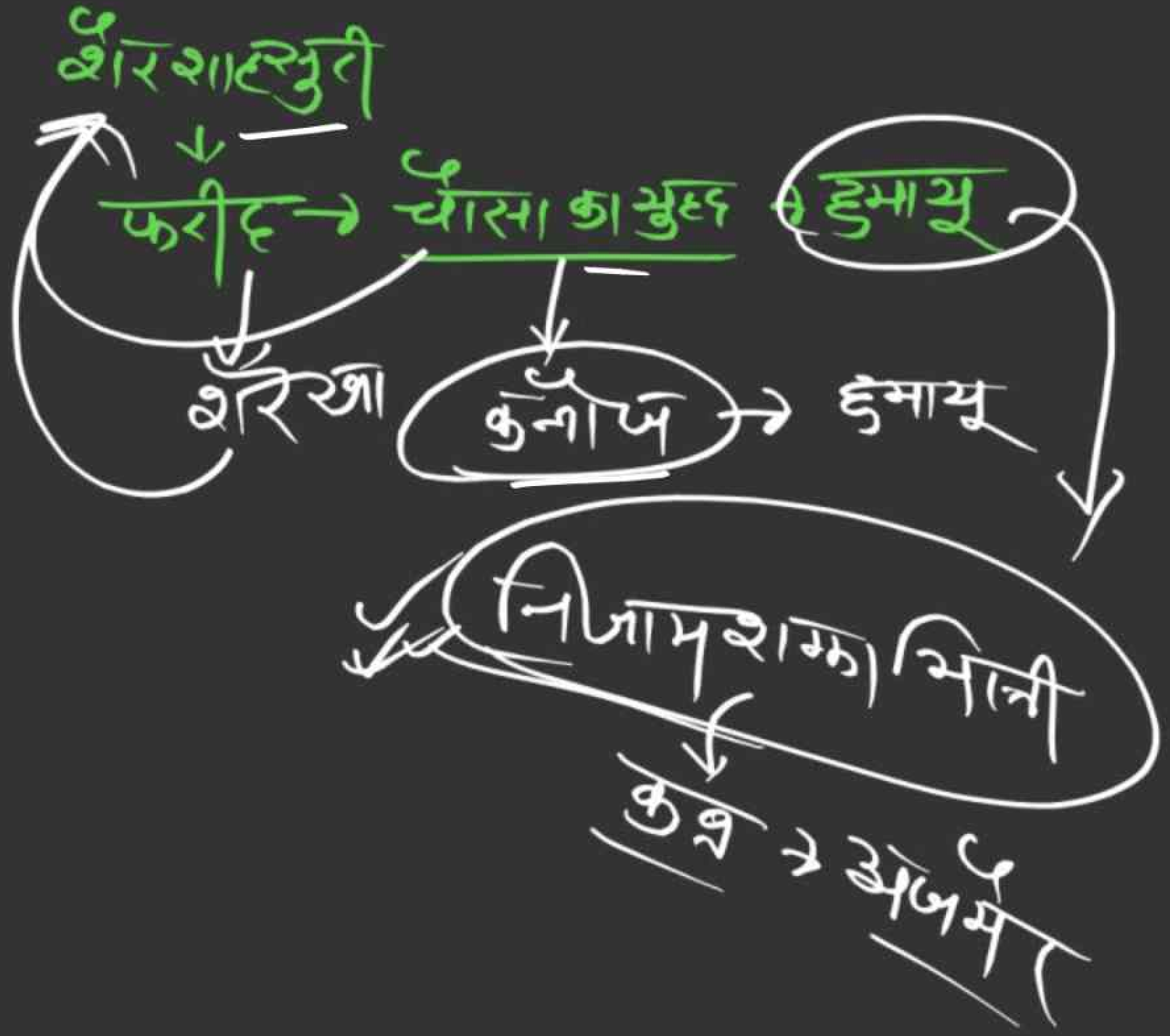
शेरशाहसुरी
फरीद
चौसा का युद्ध
हुमायु
शेरखा
कन्नौज
हुमायु
निजाम शक्का भिश्ती
कुतुब
अजमेर

Imp

अफगानों की अधिनता स्वीकार करने वाले शासक → शेरशाह सूरी

- ✓ बीकानेर → कल्याणमल
- ✓ मेड़ता → विरमदेव
- ✓ जयपुर → रत्न सिंह कछवाह
- ✓ मेवाड़ → महाराणा उदय सिंह

- गिरी सुमेल / जैतारण का युद्ध → 5 जन. 1544
  - ↳ ब्यावर जिले
- इस युद्ध मे शेरशाह सूरी की जीत
- → मालदेव ने इस युद्ध से पहले ही सिवाणा दुर्ग मे शरण ली
- → इस युद्ध मे जैता / कूंपा 20,000 सैना के साथ लेकर 80 हजार सैना (शेरशाह सूरी) युद्ध लड़ा वीरगति पायी

जलालखाँ जलवानी

शेरशाह सूरी

कल्याणमल

वीरमदेव

"हुमायूँ" → जोगी तीर्थ → मालदेव

मालदेव

↓

सिवाणा

जोधपुर

जैता कुम्पा

80,000

40,000

जालीपत्र

प्रशासक → ख्वास खाँ इसानी

शेरशाह सूरी युद्ध मे विजय | जोधपुर पर अधिकार।

अन्तिम समय मे सूरी का सहयोग → जलाल खां जलवानी ने किया।

राव मालदेव → 1531-62

शेरशाह सूरी कथन :

↳ मैं मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिन्दुस्तान की बादशाहत खो बैठता

↳ " काश । जैता और कुम्पा जैसे विश्वासपात्र सेनापति मेरे पास होते तो मैं हिन्दुस्तान का बेताज बादशाह होता ।

→ जोधपुर दुर्ग मे शेरशाह सूरी ने अपने नाम से मस्जिद बनायी

most
जहांगीर
नूरजहां
अनासागर झील
अजमेर
रूठी रानी महल
उमादे
पिछोला झील
मालदेव की पत्नी
कौमलावती
जयसिंह
जयसमंद झील
सलुम्बर
सुहावा देवी
पृथ्वीराज चौहान II
मैनाल
भीलवाड़ा
सुंदरेश्वर मंदिर

रूठीरानी - उमा दे → विवाह मालदेव
↓
पुत्री → जैसलमेर - लूणकरण भाटी

→ दहेज → भारमली की साथ भेजा

→ अजमेर चली गयी → वहा जीवन यापन

मनाने के लिए → ईश्वर बारहठ | उमा दे

आशानन्दजी ने रोका उमा दे

→ उमादे का विवाह मालदेव के साथ हुआ

→ इतिहास मे रूठी रानी के नाम से जानी जाती है

→ उमादे के साथ भारमली आयी

→ उमादे रूठकर तारागढ दुर्ग अजमेर | केलवा | गुरोंज नामक स्थानपर रही

→ 1562 मे मालदेव की मृत्यु के बाद उमादे तारागढ मे सती हुयी

→ छतरी → तारागढ अजमेर

नोट : पति की पगड़ी या वस्तु के साथ सती होना अनुमरन प्रथा कहलाते

→ 1562 में मालदेव की मृत्यु

→ मालदेव ने सोजत किला, मेड़ता, सातलमेर दुर्गों का निर्माण करवाया

→ जोधपुर दुर्ग का आधुनिक निर्माता → मालदेव

→ चित्रकला शैली का उद्‌भव → मालदेव